



# INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

## भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और इसकी उपादेयता : एक अध्ययन

भावना

छात्राध्यापिका, शिक्षा संकाय, जी एल ए विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा

सहायक प्रवक्ता, शिक्षा संकाय, जी एल ए विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

### सारांश:

यह प्रपत्र भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और इसकी उपादेयता का विश्लेषण करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जो वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद और दर्शन जैसी शास्त्रों में समाहित है, जीवन के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पक्षों को संतुलित रूप से विकसित करने पर जोर देती है। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से बौद्धिक और व्यावसायिक कौशल पर केंद्रित है, जिसमें नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा की उपेक्षा होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का समग्र दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है, विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन, और आत्मिक उन्नति के संदर्भ में। शोध में यह भी सुझाव दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित किया जा सकता है, ताकि विद्यार्थी न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि मानसिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी समग्र रूप से विकसित हो सकें। यह प्रपत्र भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय एक अधिक समृद्ध और संतुलित शिक्षा प्रणाली की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

**कुंजी शब्द:** भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय संस्कृति, आधुनिक शिक्षा, गुरुकुलीय शिक्षा

## प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम ज्ञान प्रणालियों में से एक मानी जाती है। यह परंपरा न केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित है, बल्कि इसमें जीवन के सभी पहलुओं—बौद्धिक, भौतिक, सांस्कृतिक, और नैतिक—का समावेश किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रमुख उद्देश्य मानव जीवन के उद्देश्य, प्राकृतिक तत्वों के बारे में गहन समझ, और आत्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करना था। भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक आधार वेदों, उपनिषदों, पुराणों, आचार्यों के सिद्धांतों और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से जुड़ा हुआ है। इस परंपरा ने जीवन के गहरे रहस्यों को समझने के लिए शास्त्रों, तात्विक सिद्धांतों, योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, संगीत, गणित, और साहित्य जैसे अनेक विषयों का अध्ययन किया है। यह परंपरा न केवल एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास के लिए उपयोगी रही है, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान देती रही है।

## भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। यह ज्ञान परंपरा एक अद्वितीय संकलन है, जिसमें धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला, और समाजशास्त्र के विषयों का समावेश किया गया है। भारतीय वेदों और उपनिषदों में न केवल धार्मिक और धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन मिलता है, बल्कि जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी दिया गया है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में ज्ञान की एक व्यापक परिभाषा है, जो न केवल बौद्धिक विकास तक सीमित है, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक उन्नति से भी जुड़ी है।

1. **ऋग्वेद** - ज्ञान का स्रोत, जिसमें ब्रह्मा, सृष्टि, और अस्तित्व के बारे में गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं।
2. **यजुर्वेद** - कर्मकांड और यज्ञों के माध्यम से जीवन के उद्देश्य और सामाजिक जिम्मेदारियों को व्यक्त करता है।
3. **सामवेद** - उपासना और भक्ति के मार्ग का संकेत करता है, जिससे व्यक्ति का मानसिक और आध्यात्मिक उन्नयन संभव होता है।
4. **अथर्ववेद** - चिकित्सा, विज्ञान और भूत-प्रेत से संबंधित ज्ञान प्रदान करता है, जो जीवन की रक्षा और भलाई के लिए उपयोगी होता है।

इन वेदों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा ने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। वेदांग और उपनिषदों में ज्ञान के अलावा जीवन के नैतिक और व्यावहारिक पक्ष पर भी गहरी समझ दी गई है। इन ग्रंथों में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति की नैतिक, शारीरिक और मानसिक प्रगति भी था।

## भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्तंभ

भारतीय ज्ञान परंपरा की नींव वेदों पर आधारित है। वेदों को भारतीय ज्ञान की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति माना गया है। वेदों के अतिरिक्त उपनिषद, वेदांग, आचार्य गौतम, कनाद, पाणिनि, पतंजलि, और अन्य महान विद्वानों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया।

### 1. वेदों का महत्व

वेदों को भारतीय ज्ञान का आदिक्रम माना जाता है। चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—हमें न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि जीवन के भौतिक और मानसिक पहलुओं पर भी गहरी जानकारी प्रदान करते हैं।

- **ऋग्वेद:** यह वेद ज्ञान का स्रोत है, जिसमें प्राकृतिक जगत, सृष्टि के रहस्यों और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। ऋग्वेद के मंत्र हमें जीवन के सच्चे उद्देश्य को समझने में मदद करते हैं।
- **यजुर्वेद:** यजुर्वेद कर्मकांड और यज्ञों के माध्यम से धार्मिक आचारों और सामाजिक जिम्मेदारियों को स्पष्ट करता है। यह वेद जीवन के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है।
- **सामवेद:** सामवेद मुख्य रूप से संगीत और भक्ति के साथ जुड़ा हुआ है। यह वेद शांति, ध्यान और साधना के माध्यम से आत्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करता है।
- **अथर्ववेद:** यह वेद विज्ञान, चिकित्सा और तंत्र-मंत्र से संबंधित है। इसमें जीवन की रक्षा और विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं के समाधान के लिए उपायों का विवरण दिया गया है।

### 2. उपनिषद

उपनिषद वेदों के अंतर्गत गूढ़ तात्विक ज्ञान और आध्यात्मिक सिद्धांतों का संग्रह हैं। उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्मा, और संसार के संबंध पर गहरी चर्चा की गई है। 'आत्मा ब्रह्मा' का सिद्धांत यह बताता है कि आत्मा और ब्रह्मा (सार्वभौमिक चेतना) एक ही हैं। उपनिषदों ने मानव जीवन के उद्देश्य, मुक्तिद्वार, और संसार से परे दिव्य सत्य को जानने के मार्गों की दिशा दी है।

### 3. वेदांग और संस्कृत काव्य

वेदांग वेदों के अध्ययन और समझने के लिए सहायक शास्त्र हैं। ये प्रमुख रूप से शाब्दिक ध्वनि, गणना, छंद, व्रत और ज्योतिष से संबंधित हैं। संस्कृत काव्य, जिसे भारतीय साहित्य का अभिन्न हिस्सा माना जाता है, ने न केवल शास्त्रीय शास्त्रों को प्रसारित किया, बल्कि भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी समृद्ध किया।

#### 4. दर्शनशास्त्र (फिलोसफी)

भारतीय दर्शन में विविध स्कूल (सम्प्रदाय) हैं, जिनमें वेदांत, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा और लक्ष्मणादि महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक दर्शन शास्त्र ने जीवन, मृत्यु, ब्रह्मा, आत्मा, और उनके अंतर्संबंधों पर गहरी चिंतन किया है। दर्शनशास्त्र ने आचार्य, गुरु और शिष्य के संबंधों को भी स्पष्ट किया है और जीवन के उद्देश्य को समझने में मार्गदर्शन प्रदान किया है।

#### 5. आयुर्वेद

आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में एक प्राचीन और अत्यधिक समृद्ध ज्ञान परंपरा है। आयुर्वेद का उद्देश्य केवल शारीरिक उपचार नहीं था, बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने के सिद्धांत पर आधारित है। आयुर्वेद ने जीवन के प्राकृतिक सिद्धांतों को समझने का प्रयास किया, जैसे कि पंचतत्त्व, दोष, और शरीर के अंदरूनी संतुलन को बनाए रखना।

#### 6. योग

योग भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। पतंजलि द्वारा वर्णित अष्टांग योग शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए एक समग्र मार्ग है। योग के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपनी शारीरिक स्थिति को सुधारता है, बल्कि मानसिक स्थिति को भी सुदृढ़ करता है, जिससे वह जीवन के कष्टों और कठिनाइयों से पार पा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा अनुसार सम्पूर्ण विश्व ही परिवार है — यह विचार भारतीय संस्कृति और दर्शन में गहरे तरीके से रचा-बसा हुआ है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने सदा से ही वैश्विक दृष्टिकोण को अपनाया है, जिसमें यह माना गया है कि हर जीव और प्रकृति के सभी तत्व आपस में जुड़े हुए हैं। इस अवधारणा को "वसुधैव कुटुम्बकम्" (विपरीत अर्थ में, सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है) के रूप में व्यक्त किया गया है, जो भारतीय संस्कृति का मूलभूत सिद्धांत है। यह विचार भारतीय ज्ञान परंपरा में गहरे रूप से निहित है और इसको प्राचीन वेदिक मंत्रों के माध्यम से भी स्पष्ट किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में जीवन के हर पहलू में समग्रता की दृष्टि को अपनाया गया है। यह विश्वास कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, वेदों और उपनिषदों में कई मंत्रों के रूप में व्यक्त किया गया है, जो व्यक्ति, समाज और समग्र विश्व के कल्याण की कामना करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख मंत्र हैं जो इस व्यापक दृष्टिकोण और विश्व बंधुत्व को प्रकट करते हैं:

- वसुधैव कुटुम्बकम्

सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है, अर्थात हम सभी जीव और तत्व एक ही उत्पत्ति से आए हैं और एक ही उद्देश्य की ओर बढ़ रहे हैं। इस मंत्र का उद्देश्य मानवता की एकता और विश्वव्यापी भाईचारे का प्रचार करना है। यह विचार विशेष रूप से महोपनिषद और मण्डूक्य उपनिषद में पाया जाता है।

- **ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः**

यह मंत्र वेदों से लिया गया है और यह पूरे विश्व के कल्याण और सुख की कामना करता है। इसे एक सार्वभौम आशीर्वाद के रूप में जाना जाता है।

**ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।**

**सर्वे भद्राणि पाहन्तु, मा कश्चित् दुःख भागभवेत्॥**

"सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी के जीवन में भलाई हो, और कोई भी दुखी न हो।" यह मंत्र समग्र कल्याण, शांति और स्वास्थ्य के लिए है और यह सभी प्राणियों के लिए शुभकामनाएँ प्रकट करता है। इस मंत्र में संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना की जाती है, जो सनातन धर्म के दृष्टिकोण को दर्शाता है कि हम सभी एक परिवार हैं।

- **ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः**

यह मंत्र शांति की तीन अवस्थाओं—शरीर, मन और आत्मा—की प्रार्थना करता है। इसके साथ ही यह पूरे संसार में शांति की अभिलाषा को भी दर्शाता है, और यह सनातन धर्म के सामूहिक दृष्टिकोण को प्रकट करता है कि समग्र विश्व में शांति और समृद्धि का होना चाहिए।

- **आत्मा तत्त्वमसि**

यह मंत्र उपनिषदों से लिया गया है और यह सिद्धांत व्यक्त करता है कि प्रत्येक आत्मा (आत्मा) ब्रह्म के साथ एक है। "तत्त्वमसि" का अर्थ है "तुम वही हो", यानी मानव आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं। इस मंत्र के द्वारा सनातन धर्म यह सिखाता है कि ब्रह्म के साथ एकता से ही व्यक्ति और समाज में समृद्धि और संतुलन आता है।

- **ॐ पंचायतनं शान्तिमायातं**

यह मंत्र वेदों और उपनिषदों के माध्यम से यह संदेश देता है कि सम्पूर्ण विश्व को शांति, समृद्धि और संतुलन की आवश्यकता है। यह मंत्र समग्रता की भावना और वैश्विक एकता को दर्शाता है।

- **"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम"**

"जहां सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक ही नायक में समाहित होता है।"

यह मंत्र दर्शाता है कि सभी सृष्टि और जीव ब्रह्म के माध्यम से एकत्रित होते हैं, और सबका एक ही उद्देश्य है। यह शांति और एकता की भावना को फैलाता है, जो सनातन धर्म की वैश्विक दृष्टि का प्रतीक है।

## गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली:

भारत में प्राचीन समय में ज्ञान का संचरण गुरुकुलों के माध्यम से होता था। गुरुकुल एक प्राकृतिक वातावरण में स्थापित होते थे जहां गुरु और शिष्य का संबंध केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास का भी था। यहाँ शिष्य केवल शास्त्रों का अध्ययन नहीं करते थे, बल्कि जीवन के नैतिक और व्यावहारिक पहलुओं को भी सीखते थे। गुरुकुलीय शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवन के हर क्षेत्र में सक्षम और जिम्मेदार नागरिक बनाना था। प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य केंद्र **गुरुकुल** हुआ करता था। गुरुकुलों में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि शिष्य के मानसिक और शारीरिक विकास पर भी उतना ही जोर था। शिष्य गुरु के साथ एक प्राकृतिक वातावरण में रहते थे, जहां वे न केवल विद्या प्राप्त करते थे, बल्कि नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल भी सीखते थे। **अष्टांग योग** जैसे शारीरिक और मानसिक अभ्यासों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन की समस्याओं का समाधान करने के लिए तैयार किया जाता था। गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को समग्र रूप से तैयार किया जाता था, ताकि वे जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझकर एक आदर्श नागरिक और समाज के जिम्मेदार सदस्य बन सकें।

**सहना भवतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।**

**तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषा वहै।।**

(हम सभी मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, एक दूसरे का समर्थन करें और आपस में कोई विद्वेष न रखें।)

यह मंत्र भारतीय शिक्षा पद्धति का अभिन्न हिस्सा है, जो सामूहिक सहयोग, शांति और सम्मान की भावना को सिखाता है। यह भारतीय शिक्षा पद्धति का वह मूलभूत सिद्धांत है, जो न केवल बौद्धिक विकास बल्कि सामाजिक और मानसिक विकास को भी प्राथमिकता देता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय संस्कृति में **वेदांग**, **उपनिषद्**, **दर्शन**, **धर्मशास्त्र**, **अर्थशास्त्र**, और **नाट्यशास्त्र** जैसे महान ग्रंथ भी हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरी समझ प्रदान करते हैं। इन सभी ग्रंथों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण शिक्षाएँ दी गई हैं।

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में **सोलह संस्कार** और **पंच महायज्ञ** जैसे भारतीय संस्कृति के मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया गया था। इस प्रणाली का उद्देश्य शिष्य को न केवल शिक्षा देना था, बल्कि उसे एक आदर्श नागरिक, समाज के प्रति जिम्मेदार व्यक्ति और एक संतुलित और सशक्त मानव के रूप में तैयार करना था। गुरुकुल में शिक्षा प्राकृतिक वातावरण में दी जाती थी, ताकि शिष्य का मानसिक और शारीरिक विकास संतुलित रूप से हो सके।

### गुरुकुल में शिक्षा प्रणाली के मुख्य उद्देश्य:

1. **शारीरिक और मानसिक संतुलन:** अष्टांग योग और अन्य शारीरिक अभ्यासों के माध्यम से शरीर और मन का संतुलन बनाए रखना।
2. **आध्यात्मिक उन्नति:** ध्यान, साधना और वेदों के अध्ययन से आत्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करना।

3. **नैतिक शिक्षा:** जीवन के सही और गलत के बीच भेदभाव समझाना और समाज में सामूहिक जीवन जीने की कला सिखाना।

## भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो केवल बौद्धिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक पहलुओं का भी समावेश है। यह परंपरा जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन बनाए रखने की बात करती है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में स्थिरता, शांति, और सामंजस्य पा सके। भारतीय ज्ञान परंपरा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **समग्र दृष्टिकोण:** भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य केवल बाहरी संसार की जानकारी नहीं था, बल्कि इसमें मानव के शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक पक्षों का समग्र विकास होता था। वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, और दर्शनशास्त्र इस दृष्टिकोण को सामने लाते हैं।
2. **प्राकृतिक संतुलन:** भारतीय ज्ञान परंपरा ने प्राकृतिक संसार और उसके तत्वों को एक दूसरे से जुड़ा हुआ माना है। इस दृष्टिकोण से जीवन को अधिक सशक्त और संतुलित बनाने की दिशा में कार्य किया जाता है।
3. **नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा:** भारतीय परंपराएँ जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक पक्षों को भी महत्व देती हैं। यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए, बल्कि समाज में सामूहिक शांति और समृद्धि के लिए भी आवश्यक है।
4. **समानता और विविधता का सम्मान:** भारतीय ज्ञान परंपरा में हमेशा समानता और विविधता का सम्मान किया गया है। **संगच्छध्वम् संबदध्वम् सं वो मनांशी जानताम्**—इस मंत्र का अर्थ है कि हम सभी को एक साथ चलना चाहिए, एक दूसरे से संवाद करना चाहिए और एक दूसरे के विचारों का सम्मान करना चाहिए। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल सिद्धांतों में से एक है, जो समाज में समरसता और सामूहिक प्रगति को बढ़ावा देता है। **NEP 2020** में इस सिद्धांत का पालन करते हुए, समानता, समृद्ध ज्ञान और प्राचीन मूल्यों को अपनाने का प्रयास किया गया है। यह नीति विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से न केवल अकादमिक ज्ञान, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता भी प्रदान करती है, ताकि वे एक समान और समृद्ध समाज के निर्माण में योगदान कर सकें।

## भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन समाज

भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उसने ज्ञान को समग्र दृष्टिकोण से देखा। आज की दुनिया में, जहां पश्चिमी शिक्षा प्रणालियाँ बौद्धिकता और भौतिकता पर जोर देती हैं, भारतीय परंपराओं में जीवन के हर पहलु में संतुलन और समग्र विकास पर बल दिया गया है। वर्तमान समय में, वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण के प्रभाव के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा कुछ हद तक हाशिये पर चली गई है। लेकिन आज के युवा वर्ग को पुनः अपने प्राचीन ज्ञान की महत्ता समझने की आवश्यकता है। भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर को बचाने और उसका पुनरुद्धार करने के लिए कदम उठाने होंगे।

## विदेशी शिक्षा का प्रभाव और भारतीय ज्ञान परंपरा

इतिहास में, पश्चिमी शिक्षा पद्धतियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को दबाने का प्रयास किया है। औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी शिक्षा की प्रधानता बढ़ी, जिससे भारतीय सांस्कृतिक और ज्ञान की परंपराएँ हाशिए पर चली गईं। इस प्रभाव के कारण भारतीय समाज ने अपनी पुरानी शिक्षा पद्धतियों को छोड़ दिया और पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को अधिक प्राथमिकता दी। हालांकि, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुद्धार करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस नीति के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राचीन ज्ञान और सामाजिक व्यवस्था को फिर से समझने और अपनाने का प्रयास किया जा रहा है। यह भारतीय शिक्षा को एक **सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ** में फिर से जीवित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

## आधुनिक शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा

आज के संदर्भ में, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** ने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को पहचानते हुए उसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करने का निर्णय लिया है। यह नीति न केवल छात्रों को **विषय आधारित ज्ञान** प्रदान करने का लक्ष्य रखती है, बल्कि **विकल्पात्मक, विश्लेषणात्मक, और अनुसंधान कौशल** जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी ध्यान देती है, ताकि विद्यार्थी वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकें। NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः जीवित करने के प्रयास किए गए हैं, ताकि विद्यार्थी जीवन के गहरे पहलुओं से परिचित हो सकें। यह नीति विद्यार्थियों को वैदिक और प्राचीन ज्ञान की शिक्षाएँ देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। **वैदिक शिक्षा** का उद्देश्य था—मानव की **प्राकृतिक शक्तियों** को सुविकसित करना और उसे जीवन की समस्याओं को सुलझाने में सक्षम बनाना। वैदिक शिक्षा ने व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से सक्षम किया, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी उसे सशक्त बनाया। तत्कालीन शिक्षा प्रणाली **स्मृति, धारणा और बोध** पर आधारित थी, जो विद्यार्थियों को न केवल सीखने, बल्कि जीवन के अनुभवों से भी सिखाने का माध्यम थी। ऋग्वेद के माण्डुक सूक्त में **तोता रटंत पद्धति** को अपनाने वाले शिष्यों का उदाहरण दिया गया है, जो केवल याद करते थे, लेकिन उनके ज्ञान का वास्तविक अनुप्रयोग नहीं था। इसके विपरीत, उपनिषदों में **संवाद और प्रायोगिक विधियाँ** के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया को दिखाया गया है, जो शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और जीवन से जुड़ा बनाता है।

## आधुनिक समय में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपादेयता :

आधुनिक युग ने हमें अनेकों तकनीकी, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उन्नति दी है, लेकिन इसके साथ-साथ कुछ समस्याएं और चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और औद्योगिकीकरण ने मानव जीवन को बेहतर बनाने के बजाय कई बार इसे जटिल और तनावपूर्ण बना दिया है। इसके बावजूद, भारतीय ज्ञान परंपरा अपनी समृद्ध और समग्र दृष्टि के कारण आज भी प्रासंगिक है। आज के युग में, जब हमें तात्कालिक सफलता, भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा के दबाव का सामना करना पड़ता है, भारतीय ज्ञान परंपरा हमें जीवन के गहरे अर्थ को समझने, मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन प्राप्त करने के मार्ग दिखाती है।

## 1. मानसिक स्वास्थ्य और तनाव

आज के समय में तनाव, चिंता, और मानसिक समस्याएँ समाज में बहुत बढ़ गई हैं। अधिकतर लोग अपनी दिनचर्या में मानसिक शांति को खो बैठते हैं, जिससे तनाव, अवसाद, और अन्य मानसिक विकार उत्पन्न होते हैं। भारतीय योग और ध्यान की परंपरा, जो आत्मिक शांति और मानसिक संतुलन पर बल देती है, आज के समय में अत्यंत आवश्यक हो गई है। योग और ध्यान, मानसिक शांति को बनाए रखने और तनाव को कम करने में प्रभावी हैं। उदाहरण के लिए, **पतंजलि के अष्टांग योग** का अभ्यास आज भी मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन प्राप्त करने के लिए किया जाता है। योग के विभिन्न आसन और प्राणायाम शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होते हैं।

## 2. नैतिक शिक्षा का महत्व

आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों की कमी साफ तौर पर महसूस की जाती है। भ्रष्टाचार, असमानता, और नैतिक पतन की बढ़ती प्रवृत्तियाँ समाज को एक संकट की ओर ले जा रही हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा नैतिक शिक्षा और आत्मानुशासन को महत्व दिया है। **गांधी जी के जीवन और उनके विचारों** से यह स्पष्ट होता है कि सत्य, अहिंसा, और अन्य नैतिक सिद्धांतों का पालन करने से व्यक्ति और समाज दोनों में सच्ची शांति और विकास आ सकता है। भारतीय दर्शन, विशेष रूप से **दार्शनिक विचारधाराएँ जैसे वेदांत, भागवद गीता, और जैन धर्म** नैतिकता, आत्मनिर्भरता, और सच्चाई के प्रति समर्पण की शिक्षा देती हैं। ये सिद्धांत आज के उपभोक्तावादी और भौतिकवादी समाज में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

## 3. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

आधुनिक समाज में विकास की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। यह न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए संकट भी उत्पन्न करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में **प्रकृति और पर्यावरण को देवी-देवताओं का रूप माना गया है**, जैसे कि वृक्षाँ, नदियों, और पहाड़ों की पूजा की जाती है। यह समझ हमें सिखाती है कि प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और उनका संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है। **आयुर्वेद और वास्तुशास्त्र** जैसे पारंपरिक ज्ञान के क्षेत्रों में भी यह देखा जाता है कि भारतीय संस्कृति ने हमेशा प्राकृतिक तत्वों और जीवन के संतुलन पर ध्यान दिया। इस दृष्टिकोण से आज भी हम पर्यावरण संरक्षण के उपायों को समझ सकते हैं और अपना सकते हैं।

## 4. समाज में समानता और समरसता

आजकल के समाज में जातिवाद, धर्मांधता, और अन्य प्रकार की असमानताओं के कारण समाज में विभाजन और तनाव बढ़ रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा **समानता और समरसता** के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया है। **उपनिषदों और भगवद गीता** में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी प्राणियों में एक समान आत्मा है और सभी का मूल अस्तित्व एक ही है। इस दृष्टिकोण को अपनाकर समाज में समानता और सामूहिकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। **संगच्छध्वं समवदध्वं** का मंत्र, जो सभी को एकजुट होकर कार्य करने का संदेश देता है, आज भी हमारे समाज के लिए प्रासंगिक है।

## 5. आध्यात्मिक उन्नति और जीवन के उद्देश्य की खोज

आधुनिक समाज में जहाँ तकनीकी प्रगति ने हर पहलू में परिवर्तन किया है, वहीं व्यक्ति अपनी आत्मिक उन्नति और जीवन के उद्देश्य को भूल रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने जीवन को केवल भौतिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और मानसिक दृष्टिकोण से भी देखा है। आध्यात्मिक साधना, ध्यान, योग, और दर्शन से जीवन के उद्देश्य और गहरे अर्थ को समझने की प्रेरणा मिलती है। भारतीय परंपराएँ जीवन के उद्देश्य को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो किसी व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण और आत्मबोध की दिशा में मार्गदर्शन करती हैं।

### निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करने के महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस नीति का उद्देश्य न केवल शैक्षिक विकास, बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी विद्यार्थियों का समग्र विकास करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जो प्राचीन समय से ही मानव सभ्यता के उत्थान के लिए प्रेरणा स्रोत रही है, आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। यह नीति हमें यह सिखाती है कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर पहलू को समग्र रूप से समझने और उसे समाज के लाभ में लगाने का माध्यम है। भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुद्धार से हम एक ऐसे समाज की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं, जिसमें समानता, समृद्धि और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान किया जाता है।

### संदर्भ:

शर्मा, आर. (2020). आधुनिक शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा: एक अध्ययन. *शिक्षा और समाज*, 45(3), 123-134.

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारत में शिक्षा के भविष्य के लिए रूपरेखा*। भारत सरकार।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2020). *आधुनिक शिक्षा में पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का समावेश: चुनौतियाँ और अवसर*। NCERT।

गुप्ता, आर., & कुमार, एस. (2019). भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समकालीन शिक्षा में समावेश: चुनौतियाँ और समाधान। *राष्ट्रीय शैक्षिक सम्मेलन की कार्यवाही* (पृ. 45-60)। भारतीय शिक्षा समाज।